वर्ष : 12 अंक : 1 जनवरी–मार्च 2017

पन्त प्रसार सन्देश

(प्रसार शिक्षा निदेशालय की त्रैमासिक समाचार पत्रिका)
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संरक्षकः डा. जे. कुमार, कुलपति
मुख्य सम्पादकः डा. वाई. पी. एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा
सम्पादकः डा. जितेन्द्र सिंह, पोस्ट डाक्टरल फेलो एवं ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (कृषि अभियन्त्रण)

कुलपति संदेश

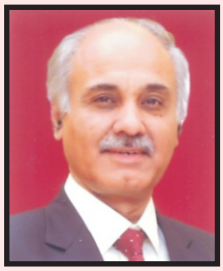

'पन्त प्रसार सन्देश' पत्रिका का जनवरी–मार्च, 2017 (वर्ष 12:1) अंक आपके हाथों में है। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध निष्कर्षों को जन–जन तक पहुंचाने में प्रसार शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रसार गतिविधियों को संकलित कर प्रबुद्ध वर्ग में प्रस्तुत करने से वैज्ञानिकों एवं प्रसार कर्मियों को प्रेरणा मिलती है। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों जैसे प्रशिक्षणों, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों इत्यादि द्वारा प्रदेश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में कृषक, कृषक महिलाएं एवं युवक तकनीकी अर्जित कर आजीविका एवं स्वरोजगार के क्षेत्र में आशातीत वृद्धि करने में सफल होंगे ऐसा मेरा विश्वास है। इस पत्रिका द्वारा पन्तनगर विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय की गतिविधियों को आप तक पहुंचा कर हमें प्रसन्नता हो रही है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका प्रसार कार्यों को और अधिक गतिशील बनाने में सहभागी होगी।

शुभकामनाएँ।

(जे. कुमार)
कुलपति

101वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का सफल आयोजन

प्रसार शिक्षा निदेशालय के तत्वाधान में 'कृषि कुंभ' के नाम से विख्यात 101वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का भव्य आयोजन मार्च 04–07, 2017 को विश्वविद्यालय परिसर में किया गया। मेले का उद्घाटन

किसान मेले का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि, डा0 बी0एस0 बिष्ट

04 मार्च, 2017 को प्रातः 11 बजे मुख्य अतिथि, डा. बी.एस. बिष्ट, निदेशक बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाईड साइंसेज, भीमताल (नैनीताल) द्वारा कुलपति डा. जे. कुमार, मा. प्रबन्ध परिषद सदस्यगण श्री राजेन्द्रपाल सिंह, डा. अजय कुमार सिंह एवं श्री जे.एस. संधु तथा अन्य गणमान्य जनप्रतिनिधियों, अधिष्ठातागण, निदेशकगण, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों, छात्रों एवं कृषकों की उपस्थिति में गाँधी मैदान में किया गया। मेले का उद्घाटन करने के बाद अतिथियों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा मेला प्रांगण में लगे स्टॉलों का भ्रमण एवं अवलोकन किया गया। तत्पश्चात् गाँधी सभागार में आयोजित उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि, डा. बिष्ट ने कहा कि परिशुद्ध खेती, जिसे स्मार्ट खेती या परिष्कृत खेती के नाम से भी जाना जाता है, को प्रत्येक किसान तक पहुंचाने की आवश्यकता है, ताकि कम से कम संसाधनों के प्रयोग द्वारा अधिक से अधिक उत्पादन लिया जा सके तथा पर्वतीय कृषि को भी लाभकारी बनाकर किसानों को इससे जुड़े रहने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। डा. बिष्ट ने नैनो तकनीक, पॉलीहाउस तकनीक, बायो तकनीक आदि आधुनिक तकनीकों को परिशुद्ध खेती के साथ समन्वित करने की बात कही। मुख्य अतिथि ने वैज्ञानिकों द्वारा विकसित नई–नई तकनीकें एवं नई प्रजातियों के गुणवत्तायुक्त बीज पर्वतीय क्षेत्र के किसानों तक पहुंचाने को भी अत्यन्त आवश्यक बताया। उन्होनें विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के प्रवेश की क्षमता

बढ़ाये जाने, इन्टरनेशनल स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर को पुनः प्रारम्भ किये जाने एवं खाद्य प्रसंस्करण पर अधिक ध्यान दिये जाने के लिए भी कहा एवं आशा प्रकट की कि पन्तनगर के वैज्ञानिक, विद्यार्थी एवं बीज पूरे देश एवं विदेशों में अपना परचम लहराते रहेंगे।

कुलपति डा. जे. कुमार ने कहा कि वर्ष 1950–51 से अब तक देश में खाद्यान्न उत्पादन में 5 गुना, दुग्ध उत्पादन में 9 गुना, मत्स्य उत्पादन में 11 गुना एवं कुक्कुट उत्पादन में 32 गुना वृद्धि हुई है। साथ ही कृषि के कई क्षेत्रों में भारत विश्व में पहले अथवा दूसरे स्थान पर है, अपितु उत्पादकता के क्षेत्र में हम अभी काफी पीछे है। डा. जे. कुमार ने कुछ किसानों द्वारा विश्व स्तर से अधिक उत्पादकता लिये जाने का जिक्र करते हुए अन्य किसानों को उनसे सीख लेने को कहा, ताकि 1.8 प्रतिशत की दर से बढ़ रही जनसंख्या के लिये वर्ष 2050 तक 350 मिलियन टन खाद्यान्न के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। कुलपति ने अगली हरित क्रान्ति में छोटे व सीमान्त किसानों की अधिक संख्या को देखते हुए उनकी भूमिका को महत्वपूर्ण बताया तथा उनके लिए नई तकनीकें विकसित करने का वैज्ञानिकों से आह्वान किया। उन्होंने आशा प्रकट की कि अगली हरित क्रान्ति की जननी के रूप में भी पन्तनगर विश्वविद्यालय पहचाना जायेगा।

प्रबन्ध परिषद के सदस्यगण डा. अजय सिंह एवं श्री जे.एस. संधु ने कृषि प्रधान देश एवं प्रदेश होने के कारण उत्तराखण्ड एवं पूरे देश के किसानों की निगाहें एवं उम्मीदे पन्तनगर की ओर लगे रहने की बात कही तथा यहां से विकसित तकनीकों से लाभान्वित होकर किसानों की उन्नति होने के बारे में भी कहा। उन्होंने पन्तनगर के वैज्ञानिकों से प्रदेश की विभिन्न जलवायु के क्षेत्रों के लिए तकनीकें विकसित करने की अपेक्षा की। समारोह के प्रारम्भ में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा सभी सम्मानित अतिथियों का स्वागत एवं समारोह के अन्त में निदेशक, अनुसंधान केन्द्र, डा. जे.पी. सिंह ने सभी सम्मानित अतिथियों का धन्यवाद किया।

मेले में विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के साथ–साथ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के फर्मों ने स्टॉल लगाकर कृषि से सम्बन्धित उत्पादों एवं तकनीकों का प्रदर्शन किया। मेले में अनुसंधान केन्द्रों पर परीक्षणों/ प्रदर्शनों का अवलोकन, खरीफ की फसलों के नवीनतम प्रजातियों के बीज व मिनीकिट की बिक्री, शाक–भाजी एवं फलों के उन्नत बीजों व पौधों की बिक्री, किसानोपयोगी उन्नत तकनीकों की प्रदर्शनी, आधुनिक कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी, विश्वविद्यालय प्रकाशनों की रियायती दर पर बिक्री का आयोजन किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा प्रत्येक दिवस अपरान्ह विशेष व्याख्यानमाला तथा कृषकों की समस्याओं का निराकरण हेतु कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया। कृषकों के मनोरंजन हेतु प्रत्येक दिवस सायंकाल सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। मेले के दौरान किसानों की विशेष रूचि विश्वविद्यालय की शोध इकाईयों द्वारा उत्पादित गुणवत्तायुक्त बीजों के क्रय करने में रही। इसके अलावा विभिन्न राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं बीमा कम्पनियों के स्टॉलों द्वारा कृषकों हेतु ऋण एवं अन्य उपयोगी योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई।

स्टॉल का निरीक्षण करते हुए मुख्य अतिथि

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का समापन कुलपति डा. जे. कुमार द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में खाद्य सुरक्षा के साथ–साथ यह भी देखा जाना होगा कि किसानों को आय सुरक्षा भी प्राप्त हो, ताकि उनकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार हो सके। इसके लिए उन्होंने कृषि में इन्द्रधनुषी क्रान्ति को आवश्यक बताया। उन्होंने किसानों से विविधिकरण अपनाये जाने के लिए भी कहा, ताकि वे हर वर्ष अलग फसलों की खेती से अधिक लाभ प्राप्त कर सके। डा. कुमार ने कम पानी का प्रयोग करने वाली एवं तापमान व अन्य वातावरणीय कारकों के प्रति अवरोधी प्रजातियों के विकास के साथ–साथ उत्पादकता में वृद्धि को अत्यन्त आवश्यक बताया। उन्होंने वैज्ञानिकों से किसानों को नये–नये विकल्प व नई तकनीकों से बराबर रूबरू किये जाने के लिए कहा, ताकि किसान वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खेती कर अधिक उत्पादन व अधिक लाभ प्राप्त कर सकें। उन्होंने विश्वविद्यालय में मटर के छिलके से अल्कोहल एवं रेशे बनाने की तकनीक विकसित किये जाने के बारे में भी बताया।

समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए कुलपति

समापन समारोह में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा मेले का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया गया कि किसान मेले में 111 बड़ी फर्मों एवं 109 छोटी फर्मो तथा 40 स्टॉल विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद एवं सरकारी संस्थाओं सहित कुल 260 फर्मो द्वारा विविध उत्पादों एवं तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। किसान मेले में लगभग 54,000 कृषकों एवं अन्य आगन्तुकों ने प्रतिभाग किया। इस चार दिवसीय मेले में विश्वविद्यालय के विभिन्न शोध केन्द्रों के स्टॉलों द्वारा लगभग रू. 60 लाख से अधिक मूल्य के बीज/पौधों की बिक्री की गई तथा निजी फर्मों के स्टॉलों द्वारा लगभग रू. 1 करोड़ के कृषि निवेशों जैसे बीज, उर्वरकों, रसायनों इत्यादि की बिक्री की गई। इस किसान मेले में उत्तराखण्ड के साथ–साथ देश के कई राज्यों से भी बड़ी संख्या में किसानों ने प्रतिभाग किया। समारोह के अन्त में निदेशक शोध, डा. जे.पी. सिंह ने सभी सम्मानित अतिथियों का धन्यवाद किया।

मेले में प्रगतिशील कृषक सम्मानित

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा चयनित प्रगतिशील कृषकों को कृषि के क्षेत्र में अभिनव परिवर्तन लाने एवं उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने के लिए अतिथियों द्वारा प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित किये गये कृषक श्री अवतार सिंह, ग्राम– कनकपुर (ऊधमसिंहनगर); श्री गुरजीत सिंह, ग्राम–भुआपुर (हरिद्वार); श्री नरेन्द्र सिंह बोरा, ग्राम–पाभें (पिथौरागढ़); श्री हरेन्द्र सिंह रावत, ग्राम–देवल (चमोली); श्रीमती मंजु देवी, ग्राम–तल्ला गेठिया (नैनीताल); श्री महेन्द्र सिंह, ग्राम–अम्बाड़ी (देहरादून); श्री गोधन सिंह,

प्रगतिशील कृषक को सम्मानित करते हुए कुलपति एवं अतिथिगण

मेले में प्रतिभाग किये फर्मों के प्रतिनिधि सम्मानित

पुरस्कार प्रदान करते हुए कुलपति डा. जे. कुमार

कृषि उद्योग प्रदर्शनी के पुरस्कार वितरण समारोह में अतिथियों द्वारा सर्वोत्तम स्टॉल का पुरस्कार मै. सी. आर.आई. पम्प प्रा. लि.–गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) को प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त ट्रैक्टर एवं फार्म मशीनरी समूह में मै. करतार एग्रो इण्डस्ट्रीज प्रा. लि.–पटियाला (पंजाब), मै. त्यागी एग्रो सेल्स–किच्छा (उत्तराखण्ड), मै. दशमेश मैकेनिकल वर्क्स–अमरगढ़ (पंजाब), मै. तानिश ट्रैक्टर्स–रूद्रपुर (उत्तराखण्ड), मै. पंजाब मोटर्स–रूद्रपुर (उत्तराखण्ड); नर्सरी समूह में मै. सैंचुरी पल्प एण्ड पेपर्स–लालकुआँ (उत्तराखण्ड); सीड समूह में मै. बॉयर सीड्स प्रा. लि.–लखनऊ (उत्तर प्रदेश), मै. नुजीविदू सीड्स लि.–हैदराबाद (तेलंगाना); फर्टिलाइजर्स समूह में मै. टाटा कैमिकल्स एण्ड फर्टिलाइजर लि.–बरेली (उत्तर प्रदेश); बैंक्स एण्ड अदर फाईनेन्सियल इंस्टीट्यूशन्स समूह में एस.बी.आई.–पन्तनगर (उत्तराखण्ड); वेटेरिनरी, मेडिसिनल एण्ड एनिमल फीड समूह में मै. वीरबैक एनिमल हैल्थ इण्डिया प्रा. लि.–मुम्बई (महाराष्ट्र), मै. मैनकाइन्ड फार्मा लि.–नई दिल्ली, मै. इन्टास फार्मासिटिकल्स लि. अहमदाबाद (गुजरात) एवं इन्सैक्टीसाइड्स एण्ड पेस्टिसाइडस् समूह में मै. रैलिस इण्डिया लि.–लखनऊ (उत्तर प्रदेश), मै. ओसवाल कृषि रसायन एक्सपोर्ट प्रा. लि.–नई दिल्ली, मै. गोदरेज एग्रोवेट लि. (एग्री डिवीजन)–मुम्बई (महाराष्ट्र) के स्टॉल को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कृषक प्रशिक्षण, ग्रामीण युवाओं एवं प्रसार कार्यकर्त्ताओ हेतु 23 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 401 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में 65 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया गया, जिसमें 1034 कृषकों को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई गयी तथा समस्याओं का निराकरण भी किया गया।
- विगत त्रैमास में विभिन्न स्थानीय एवं राज्य स्तरीय समाचार पत्रों पर 06 कृषि कार्यो की न्यूज प्रकाशित की गयी है तथा विभिन्न फसलों पर 02 प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें 88 कृषकों एवं रेखीय विभागों के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया, साथ ही कृषकों को नई तकनीक के बारे में विस्तार से बताया गया।
- मार्च 22, 2017 को विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, हवालबाग (अल्मोड़ा) में आयोजित किसान मेले में केन्द्र द्वारा स्टॉल लगाया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों पर 18 कृषक गोष्ठी में प्रतिभाग किया गया, जिसमें 717 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया तथा कृषकों की समस्याओं का मौके पर ही निदान भी किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में जनवरी 12, 2017 को आकाशवाणी केन्द्र, अल्मोड़ा में डा. बी.डी. सिंह द्वारा गेहूँ मे खरपतवार नियंत्रण एवं सामयिक सस्य क्रियाएँ विषय पर रेडियो वार्ता की गयी। डा. राजेश कुमार द्वारा कृषि विकास मे प्रदर्शनों का महत्व विषय पर रेडियो वार्ता की गयी। जनवरी 19, 2017 को कुमाऊँ वाणी, मुक्तेश्वर से आये रिपोर्टर द्वारा कृषि में किसानों को आर्थिक लाभ देने के प्रयास एवं वर्तमान में कृषि व्यवस्था की आवश्यकता पर डा. आर.के. शर्मा द्वारा रेडियो वार्ता की गयी, साथ ही डेयरी विकास के लिए चारा उत्पादन एवं जैविक खाद बनाने की तकनीक एवं लाभ विषय पर डा. शिव दयाल द्वारा रेडियो वार्ता की गयी।
- केन्द्र द्वारा मार्च 21, 2017 को ग्राम मटेला एवं मार्च 22, 2017 को ग्राम महतगांव में पशु स्वास्थ्य शिविर लगाया गया, जिसमें 72 पशुपालकों द्वारा पशुओं में होने वाले रोग एवं बीमारियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। तदानुसार दवाईयो का वितरण भी किया गया।
- केन्द्र द्वारा मार्च 25, 2017 को पौध किस्म संरक्षण और कृषक अधिकार अधिनियम–2001 विषय पर प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ पूर्व–निदेशक, विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा, डा. जे.सी. भट्ट द्वारा किया गया, जिसमें विभिन्न स्थानीय बीजो के संरक्षण एवं उनका पंजीकरण कराने के लिए कृषकों से आह्वान किया गया। साथ ही स्थानीय बीज जैसे लाल धान, रैस, भट्ट, राजमा, लोबिया, पहाड़ी कद्दू, धारीधार तोरई, तुमड़ा आदि विशिष्ट गुणों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। इस अवसर पर 153 कृषक पुरूष–महिलाओं द्वारा प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम में कृषि विभाग, उद्यान, मत्स्य, पशुपालन, आजीविका परियोजना, कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा अपने उत्पादों के स्टॉल भी लगाये।

पौधा किस्म और कृषक अधिकार गोष्ठी का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में केन्द्र पर एवं केन्द्र के बाहर कुल 8 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए, जिसमें 187 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम गेहूँ में संतुलित उरर्वक प्रबन्धन, फल एवं सब्जी प्रशिक्षण, श्रम कम करने की तकनीक, प्राकृतिक खेती इत्यादि विषय पर आयोजित किये गये। प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु फरवरी 27, 2017 को केन्द्र में गन्ना उत्पादन तकनीकी पर 24 प्रतिभागियों को तकनीको जानकारी प्रदान की गई।
- जनपद के अंगीकृत एवं अन्य ग्रामों में दलहनी फसलों (मसूर प्रजाति पी.एल.–8) एवं चना (पी.जी.–186 प्रजाति) के प्रदर्शनों का आयोजन 125 कृषकों के यहाँ 26 है. क्षेत्रफल में किया गया है। ग्राम गंगापुर पटिया में श्री भगम सिंह के प्रक्षेत्र पर चना एवं मसूर की फसल हेतु मार्च 17, 2017 को प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें 61 कृषकों ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर पन्तनगर विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास

ने कृषकों को दलहनी फसल लगाने हेतु प्रेरित किया। प्रभारी अधिकारी डा. सी. तिवारी द्वारा कृषको को तकनीकी मार्गदर्शन दिया गया। कार्यक्रम में प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्राध्यापक सस्य विज्ञान, डा0 बी0एस0 कार्की द्वारा भी प्रतिभाग किया गया।

प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

- अन्य प्रदशनों के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा 47 कृषको के यहाँ 5.30 है. क्षेत्रफल पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों को आयोजित किया गया।
- ग्राम गढ़ी नेगी (जसपुर ब्लाक) में जनवरी 12, 2017 को सब्जी मटर प्रजाति काशी उदय पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें 48 कृषको ने प्रतिभाग किया। उद्यान वैज्ञानिक श्री डी.एस. सिंह ने सब्जी मटर की व्यावसायिक स्तर पर उत्पादित तकनीकी से अवगत कराया। इस अवसर पर पन्तनगर विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास ने भी कृषको को सब्जी उत्पादन हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम में डा0 बी0एस0 कार्की, प्राध्यापक सस्य विज्ञान, प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा भी प्रतिभाग किया गया।
- केन्द्र द्वारा संचालित किये जा रहे प्रसार कार्यक्रमों के अर्न्तगत 85 वैज्ञानिक भ्रमण एवं 155 प्रक्षेत्र भ्रमण कर 285 कृषको को केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा लाभान्वित किया गया और किसानों को व्यावहारिक तकनीकी जानकारी प्रदान की गई। 19 डायग्नोस्टिक भ्रमण किये गए, जिससे 32 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र द्वारा 05 किसान गोष्ठियों में प्रतिभाग कर 142 कृषकों को लाभान्वित किया गया।
- केन्द्र द्वारा 04 टी.वी. वार्ता रिकार्ड करवाई गई, जिनका विषय एकीकृत कृषि, फूलों की खेती, प्रसंस्करण, वैज्ञानिक संवाद इत्यादि था। केन्द्र की गतिविधियाँ 05 बार समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई तथा 02 प्रचलित लेख प्रकाशित हुए।
- प्रसंस्करण हेतु केन्द्र की वैज्ञानिक डा. प्रतिभा सिंह के मार्गदर्शन एवं तकनीकी सलाह से जमुना सहायता समूह, ग्राम बौदली की महिलाओं ने हल्दी की पैकेजिंग कर केन्द्र के स्टॉल में प्रदर्शित किये। ग्राम शहदौरा के चौधरी फार्म पर गन्ने की अधिक उत्पादन देने वाली प्रजाति को–238, को–239 डा. सी. तिवारी के मार्गदर्शन में प्रक्षेत्र पर लगाई गई। गन्ना उत्पादन की तकनीकी विधि स्टॉल के माध्यम से प्रदर्शित की गई। शहदौरा फार्म पर गन्ना उत्पादन बहुत अधिक पाया गया, जिसके लिये क्षेत्र के अन्य किसानों को भी केन्द्र द्वारा मार्गदर्शित किया जा रहा है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कुल 07 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें जनपद के 143 कृषकों एवं कृषक महिलाओं को कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया गया।
- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में 140 प्रक्षेत्र परीक्षणों में 15 प्रक्षेत्रों पर कृषि, पशुपालन, उद्यान एवं गृह विज्ञान विषयक परीक्षणों का आयोजन किया गया।
- केन्द्र द्वारा मार्च 02, 2017 से मार्च 29, 2017 तक कौशल विकास अन्तर्गत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित दो प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसमें 200 घण्टों का एक ''मशरूम उत्पादन'' एवं एक ''वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन'' का प्रशिक्षण दिया गया। प्रत्येक प्रशिक्षण में 20 युवाओं ने प्रतिभाग किया। मार्च 31, 2017 को इनकी परीक्षा ए.एस.सी.आई., गुड़गांव द्वारा किया गया।

मशरूम उत्पादन विषयक प्रशिक्षण का आयोजन

- मार्च 31, 2017 को केन्द्र द्वारा ''पौध किस्म संरक्षण और कृषक अधिकार अधिनियम'' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण को पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण, कृषि एवं सहकारिता विभाग, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में जनपद के विभिन्न ग्रामों से आये 100 से भी अधिक कृषकों ने प्रतिभाग किया। इसमें कृषकों को पौधा किस्म संरक्षण की आवश्यकता, प्राधिकरण द्वारा कृषकों को प्रदत्त अधिकार, राष्ट्रीय जीन बैंक, राष्ट्रीय जीन विधि, पंजीकरण आदि के विषय में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना एंचोली (पिथौरागढ़)

- विगत त्रैमास में केन्द्र पर 03 तथा केन्द्र से बाहर 14 प्रशिक्षण सम्पन्न किए गए, जिसमें क्रमशः 40 (पुरूष 29 एवं 11 महिला) एवं 310 (पुरूष 182 एवं 128 महिला) कृषक लाभान्वित हुए तथा ग्रामीण युवाओ को केन्द्र पर 03 प्रशिक्षण दिये गए, जिसमें क्रमशः 30 (पुरूष 26 एवं 04 महिला) कृषक लाभान्वित हुए।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में कृषकों के प्रक्षेत्र पर 50 भ्रमण किए गये, जिसके द्वारा 407 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र पर जानकारियां प्राप्त करने हेतु 567 किसानों द्वारा 283 भ्रमण किये गये और अपनी समस्याओं का समाधान एवं कृषि उत्पादन की नवीनतम जानकारी केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्राप्त की। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रचार–प्रसार हेतु दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला व दैनिक जागरण में 10 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया।

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में गेंहूँ–2.0 है., मसूर–13.0 है., सरसों–1.0 है., सब्जी मटर–0.5 है., जई–0.5 है., बरसीम–0.5 है. तथा अन्य सब्जियों को लगाया गया।
- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कुल 02 प्रक्षेत्र दिवसों का आयोजन किया गया। फरवरी 18, 2017 को केन्द्र द्वारा अंगीकृत ग्राम–जुजराली में पंत मसूर–8 फसल पर प्रक्षेत्र दिवस आयोजित किया गया और फरवरी 19, 2017 को ग्राम–कानड़ी में पंत पीली सरसों–1 प्रजाति पर प्रक्षेत्र दिवस आयोजित किया गया। इन प्रक्षेत्र दिवसों के अवसर पर कुल 62 कृषकों ने भाग लिया।
- केन्द्र द्वारा चलायी जा रही दो परियोजनाओं के अन्तर्गत कृषकों को उन्नत प्रजाति की पौध जैसे फलों में आडू की 500, प्लम की 210, खुबानी की 400, कीवी की 150, बड़ी इलायची की 4500 तथा सब्जियों में शिमला मिर्च की 60000, टमाटर की 25000, बंदगोभी की 30000, कददू की 4000, लौकी की 5000 पौधें किसानों को वितरित किये गये।
- केन्द्र द्वारा मार्च 31, 2017 को पौध किस्म संरक्षण और कृषक अधिकार अधिनियम पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में किसानों को पौध किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण अधिनियम के महत्व के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी। इस गोष्ठी में 09 रेखीय विभागों के अधिकारी व 102 किसानों ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर कृषकों को कृषक अधिकार संरक्षण पर जानकारी दी गई। कार्यक्रम के दौरान किसानों को उन्नत प्रजाति की पौध भी उपलब्ध कराई गई और दवा वितरित कर इनके प्रयोग की विधियां समझायी गई।

गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए वैज्ञानिक

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास के मध्य कुल 36 प्रशिक्षणों का आयोजन केन्द्र पर एवं केन्द्र के बाहर किया गया, जिसमें 852 किसानों एवं कृषक महिलाओं को लाभान्वित किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा कुल 17 किसान गोष्ठी में प्रतिभाग कर लगभग 1085 किसानों को व्यावहारिक तकनीकी जानकारी से सुदृढ़ किया गया। इन प्रशिक्षणों एवं गोष्ठियों में किसानों को फसल उत्पादन, सब्जी उत्पादन, पादप सुरक्षा, पोषण प्रबन्धन, फल उत्पादन, मृदा परीक्षण, पशुपालन, कुक्कुट पालन, बकरी पालन, चारा उत्पादन, पशु पोषण, गृह वाटिका, महिलाओं में पोषण प्रबन्धन, प्रसंस्करण इत्यादि विषयों पर तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराया गया। इसके अतिरिक्त एक पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन कर 24 किसानों को लाभान्वित किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मार्च 08, 2017 को ग्राम छरबा में 31 आंगनबाड़ी कार्यकत्री महिलाओं को महिला सशक्तिकरण विषय पर जागरूक किया गया।
- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों के अन्तर्गत मसूर में पन्त मसूर–7 प्रजाति के 28 प्रदर्शनों का आयोजन कृषक प्रक्षेत्रों पर 10 है. क्षेत्रफल में किया गया। अन्य फसलों जैंसे गेंहूँ की एच.डी. 2967, यू.पी. 2628, सरसों की पन्त पीली सरसों–1, मटर की स्वीट पर्ल प्रजाति, बन्दगोभी की ग्रीन साकर संकर किस्म, फूलगोभी की कैंडिड चार्म संकर प्रजाति, ब्रोकली की ग्रीन मैजिक संकर किस्म, टमाटर की सक्षम एवं दीपांकर संकर प्रजाति, लहसुन की एग्रीफाउण्ड पार्वती प्रजाति, प्याज एग्रीफाउण्ड लाईट रेड प्रजाति, कुक्कुट पालन की कैरी देवेन्द्रा प्रजाति, पशु पोषण में संतुलित आहार बनाने की तकनीक एवं नवजात पशुओं में अन्तः एवं बाहय परजीवी नियंन्त्रण, चारा उत्पादन, गृह वाटिका के अन्तर्गत कुल 202 प्रदर्शनों का आयोजन कृषक प्रक्षेत्रों पर 20.5 है. क्षेत्रफल में आयोजित किया गया।

अग्रिम पक्ति प्रदर्शन का आयोजन

- केन्द्र के वैज्ञानिकों का दूरदर्शन, देहरादून द्वारा 15 रिकार्डिंग फसल उत्पादन, सब्जी उत्पादन, फल उत्पादन, पादप सुरक्षा, पोषण प्रबन्धन, मृदा परीक्षण, कुक्कुट पालन, पशुपालन, बकरी पालन, सोयाबीन प्रसंस्करण एवं मूल्य वर्द्धन, गृह वाटिका इत्यादि विषयों पर किये गये। इसके अतिरिक्त केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा आकाशवाणी नजीबाबाद में 04 रेडियोवार्ता दी गयी।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कुल 61 डायग्नोस्टिक भ्रमण कर 417 किसानों की कृषि सम्बन्धी समस्या का निराकरण किया गया। इसी प्रकार 125 प्रक्षेत्र भ्रमण कर 1521 किसानों की कृषि से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराकर किसानों को लाभान्वित किया गया। केन्द्र पर लगभग 1246 किसानों द्वारा भ्रमण किया गया। किसानों का यह भ्रमण मुख्य रूप से केन्द्र पर तैयार की गयी प्याज एवं अन्य सब्जियों की पौध क्रय करने से सम्बन्धित था।
- गन्ना आधारित फसल चक्र से अधिक लाभ प्राप्त करने एवं इसे और अधिक टिकाउ बनाने के लिये गन्ने की शीघ्र एवं अधिक उत्पादन देने वाली प्रजाति को. 0238, को.शा. 88230 एवं को. पन्त 3220 को किसान समुदायों में व्यापक प्रचार–प्रसार के लिये विभिन्न प्रसार कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों का आयोजन मुख्य रूप से भीमावाला, विकासनगर, घमौलो एवं सहसपुर में गन्ने की ट्रेंच विधि से बुवाई, फसल विविधिकरण में गन्ने के साथ राजमा व फ्रैंन्चबीन को अन्तः फसल के रूप में उगाने हेतु किसानों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिसके उत्साहजनक परिणाम हैं।
- केन्द्र पर प्याज की एग्री फाउण्ड लाईट रेड प्रजाति की 111.52 कु. पौध तैयार कर बिक्री की गयी, जिससे लगभग 1600 किसान लाभान्वित हुये। प्याज पौध की बिक्री से केन्द्र को कुल रूपया 6,69,120.00 का राजस्व प्राप्त हुआ। इसी प्रकार कद्दूवर्गीय सब्जियों जैंसे लम्बी लौकी, गोल लौकी, खीरा, करेला, चिकनी तोरई, धारीदार तोरई, छप्पन कद्दू तथा अन्य सब्जियों में टमाटर, बैगन, हरी मिर्च एवं फलों में पपीता व अनार के कुल 93482 पौध बिक्री किये गये, जिससे लगभग 2058 किसानों को लाभान्वित किया गया। इन सब्जियों की पौध बिक्री से केन्द्र को कुल रूपया 6,76,000.00 का राजस्व प्राप्त हुआ। केन्द्र द्वारा उगायी जा रही व्यावसायिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण उपरोक्त सब्जियों एवं फलों की मांग जनपद में लगातार बढ़ रही है।
- राजभवन देहरादून में मार्च 04–05, 2017 को आयोजित बसंतोत्सव में पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय की तरफ से केन्द्र द्वारा तकनीकों के प्रदर्शन एवं कद्दूवर्गीय सब्जियों की पौध बिक्री हेतु एक स्टाल लगाया गया। दो दिनों में केन्द्र के स्टाल से कद्दूवर्गीय सब्जियों के पौध की बिक्री की गयी,

जिससे केन्द्र को रूपया 41,820.00 का राजस्व प्राप्त हुआ। केन्द्र के स्टाल में पौध क्रय करने हेतु लगभग 600 आगन्तुकों द्वारा स्टाल का भ्रमण किया गया।

- विगत त्रैमास में पशुपालन विषयक तकनीकी जानकारी हेतु 05 किसान क्लब की बैठक का आयोजन बालाजी ग्रुप, देहरादून द्वारा विकासखण्ड सहसपुर एवं विकासनगर में किया गया, जिसमे 60 कृषक पुरूष एवं महिलाओं को तकनीकी ज्ञान से लाभान्वित किया गया।

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा विगत त्रैमास में राज्य के प्रगतिशील कृषक, कृषक सलाहकार समिति (एफ.ए.सी.), ब्लाक तकनीकी प्रबन्धक (बी.टी.एम.), मशरूम उत्पादक, उद्यान निरीक्षक एवं एच.टी.एम. के प्रसार कर्मियों हेतु 'व्यावसायिक मशरूम उत्पादन' एवं 'पुष्पों की उन्नत खेती एवं मूल्यवर्धन' विषयक 02 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा कुल 34 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कार्यरत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा विगत त्रैमास में पन्तनगर कृषक हेल्पलाईन (05944–234810, 05944–235580) एवं किसान कॉल सेन्टर (1800–180–1551 टोल फ्री) के माध्यम से कुल 469 प्रश्न किसानों द्वारा पूछे गये, जिनका समाधान सम्बन्धित विषय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। देश एवं प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये 906 कृषकों ने एटिक पर भ्रमण किया एवं किसानों द्वारा एटिक से कुल रू. 92,500 के साहित्य एवं रू. 36,935 के धान्य फसलों, दलहनी, तिलहनी, मोटा अनाज एवं सब्जियों के बीजों का क्रय किया गया।

निदेशक प्रसार शिक्षा डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा विभिन्न वाह्य आयोजनों/बैठकों में प्रतिभाग

- उत्तराखण्ड लोक सेवा आयोग, हरिद्वार में जनवरी 09–10, 2017 को पशुचिकित्सा अधिकारी पद हेतु आयोजित साक्षात्कार में विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रतिभाग किया गया।
- कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर) द्वारा ग्राम–गढ़ीनेगी (जसपुर विकासखण्ड) में जनवरी 12, 2017 को सब्जी मटर (प्रजाति काशी उदय) पर आयोजित प्रक्षेत्र दिवस में प्रतिभाग किया गया।
- कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार) का फरवरी 13, 2017 को भ्रमण कर केन्द्र द्वारा क्रियान्वित किये जा रहे कार्यों का निरीक्षण किया गया।
- उत्तराखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों में मौसम विज्ञान केन्द्र स्थापित करने के सम्बन्ध में देहरादून में फरवरी 14, 2017 को अपर मुख्य सचिव कृषि, उत्तराखण्ड शासन डा. रणवीर सिंह की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में प्रतिभाग किया गया। इस बैठक में निदेशक, मौसम विज्ञान, भारत सरकार, डा. आनन्द शर्मा भी थे।
- कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर) द्वारा ग्राम–गंगापुर पटिया (रूद्रपुर विकासखण्ड) में मार्च 17, 2017 को मसूर (प्रजाति पी.एल. 8) एवं चना प्रजाति पी.जी. 186) पर आयोजित प्रक्षेत्र. दिवस में प्रतिभाग किया गया।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/भ्रमण

प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न सरकारी विभागों, स्वयं–सेवी संस्थाओं, निजी एवं सार्वजनिक फर्मों तथा परियोजनाओं द्वारा प्रायोजित कुल 18 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आयोजित किये गये यह प्रशिक्षण पशुपालन, कृषि विविधिकरण, सब्जियों एवं फलों की वैज्ञानिक खेती, स्किल डेवलेपमेन्ट, बेमौसमी सब्जी उत्पादन, भूमि एवं जल संरक्षण, बीज उत्पादन, फल उत्पादन एवं फल प्रसंस्करण, सब्जियों एवं पुष्पों की खेती तथा धान पद्धति तकनीक से सम्बन्धित थे। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से 551 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। अधिकांश प्रशिक्षण तीन दिवसीय से लेकर पांच दिवसीय थे। प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम का संचालन प्राध्यापक एवं प्रभारी प्रशिक्षण डा. एस.के. बंसल द्वारा किया गया।

पोस्ट डाक्टरल फेलो, डा. जितेन्द्र सिंह विभिन्न सम्मेलनों/अधिवेशनों में सम्मानित

- पन्तनगर विश्वविद्यालय में प्रसार शिक्षा निदेशालय के पोस्ट डाक्टरल फेलो, डा. जितेन्द्र सिंह को कृषि एवं सम्बन्धित क्षेत्र की समग्र उपलब्धियों के आधार पर अनुसंधान के क्षेत्र में 'एक्सीलेन्स इन रिसर्च अवार्ड' से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें जनवरी 14–15, 2017 को वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद–राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में 'समावेशी वृद्धि एवं विकास के लिए कृषि और खाद्य' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रदान किया गया।
- बायोवेद रिसर्च सोसायटी, इलाहाबाद द्वारा फरवरी 18–19, 2017 को बायोवेद कृषि एवं प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, इलाहाबाद में दो दिवसीय

अवार्ड प्राप्त करते हुए डा. जितेन्द्र सिंह

'कृषि और ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं को आकर्षित करने एवं बनाये रखने के लिए हरित अर्थव्यवस्था और मूल्य संवर्धन प्रौद्योगिकी की सम्भावनाएं' विषयक 19वें भारतीय कृषि वैज्ञानिक एवं किसान महाधिवेशन में डा. जितेन्द्र सिंह, पोस्ट डाक्टरल फेलो, प्रसार शिक्षा निदेशालय को 'यंग साईंटिस्ट एसोसिएट अवार्ड' से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें कार्यक्रम के समापन समारोह में पूर्व मंत्री (उच्च शिक्षा, प्रौद्योगिकी शिक्षा एवं चिकित्सा शिक्षा) उत्तर प्रदेश, डा. एन.के. सिंह गौर द्वारा निदेशक, मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद, डा. राजीव त्रिपाठी; कुलपति, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, डा. के.वी. पाण्डया एवं अन्य की उपस्थिति में प्रदान किया गया।

- सोसायटी ऑफ ह्यूमन रिसोर्स इनोवेशन द्वारा मार्च 19–20, 2017 को आगरा में 'एडवान्सेज इन ग्लोबल रिसर्च इन एग्रीकल्चर एण्ड टैक्नोलॉजी' विषयक आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान डा. जितेन्द्र सिंह, पोस्ट डाक्टरल फेलो, प्रसार शिक्षा निदेशालय को कृषि के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु 'साईंटिस्ट ऑफ द ईयर अवार्ड' से सम्मानित किया गया।

आगामी त्रैमास में कृषकों हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु

कृषि कार्य

- सूरजमुखी के खेत में फूल निकलते समय पर्याप्त नमी होना आवश्यक है। अतः 10–15 दिन के अन्तराल में सिंचाई करते रहें।
- पर्वतीय क्षेत्रों में चेतकी धान की बुवाई मार्च से लेकर अप्रैल प्रथम सप्ताह तक कर लें। इसके लिए वी.एल. धान–207, वी.एल. धान–208 एवं वी.एल. धान–209 नामक प्रजातियों का प्रयोग करें तथा जेठी धान की बुवाई मई अन्तिम सप्ताह से जून प्रथम सप्ताह तक धान की वी.एल. धान–54, वी.एल. धान–221 तथा सिंचित क्षेत्रों में गोविन्द, पन्त धान–6, पन्त धान–11 इत्यादि प्रजातियों की बुवाई करें।
- अप्रैल माह में आम के बाग की सिंचाई करें। श्यामवर्ण रोग की रोकथाम के लिए ब्लाइटाक्स–50 (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें। आन्तरिक ऊतकक्षय रोग की रोकथाम के लिए बोरेक्स (0.8 प्रतिशत) का छिड़काव करें। भुनगा कीट के लिए सेविन (0.2 प्रतिशत) और छोटी पत्ती रोग की रोकथाम के लिए जिंक सल्फेट (0.5 प्रतिशत) का छिड़काव करें।
- अप्रैल माह में अमरूद के पेड़ों की कटाई–छंटाई का कार्य करें।
- लीची, लुकाट, आंवला एवं कटहल में 15 दिन के अन्तराल पर अप्रैल माह में दो बार सिंचाई करें।
- मई माह में उर्द व मूंग में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- सिंचित क्षेत्रों में देर एवं मध्यम अवधि में पकने वाली धान की प्रजातियों का बीज पौधशाला में मई माह के अन्तिम सप्ताह से 15 जून तक डाल दें।
- गर्मियों में गन्ने की फसल में 7–10 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहें।
- पर्वतीय क्षेत्रों में मई मध्य से जून अन्त तक मंडुवा की बुवाई करें। मंडुवा की वी.एल. मंडुवा–324, वी.एल. मंडुवा–149 एवं वी.एल. मंडुवा–315 उन्नतशील प्रजातियों की बुवाई करें।
- मध्यम–ऊंचे एवं अत्यधिक–ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में अप्रैल अन्त से मई प्रारम्भ तक तथा निचले पर्वतीय क्षेत्रों में मई अन्त से मध्य जून तक मक्के की वी.एल. मक्का–42, वी.एल. मक्का–88 एवं वी.एल. मक्का–41 एवं नवजोत इत्यादि प्रजातियों की बुवाई करें।
- जून माह में कम अवधि में तैयार होने वाली अरहर की किस्मों उपास–120, प्रभात इत्यादि प्रजातियों की बुवाई करें।

पशुपालन हेतु

- पशुओं में मुँहपका–खुरपका रोग के बचाव हेतु टीकाकरण करवाएं।
- पशुओं को गर्मी से बचाव हेतु दिन में दो बार स्नान की व्यवस्था करें।
- मुर्गियों में रानीखेत एवं चेचक का टीका लगवाएं। गर्मी से बचाव के लिए छज्जे पर घास या छप्पर डालकर गीला करते रहें।
- जून माह में पशुओं पर वाह्य कृमि नाशक दवा का उपयोग करें।

निदेशक की कलम से

रबी की फसल खेतों में खड़ी है। जनवरी माह में अपेक्षित वर्षा न होने के कारण फसल एवं फलों के उत्पादन में कमी आने की सम्भावना है। चूँकि पर्वतीय कृषि अधिकांशतः वर्षा पर आधारित है, अतः आगामी दिनों में फसल के बचाव हेतु नमी संरक्षण तकनीक को अपनाना नितांत आवश्यक होगा।

जायद की सब्जियों की बुआई का मौसम आ रहा है। फरवरी से अप्रैल तक अगेती, समय से एवं पछेती विभिन्न सब्जियों जैसे भिण्डी, टमाटर, बैगन, मिर्च, लौकी, तुरई आदि की रूक–रूक कर कई चरणों में बुवाई करें, जिससे अनवरत् रूप से लम्बे समय तक सब्जियों की उपलब्धता बनी रहे तथा बेमौसम में भी लाभ अर्जित किया जा सके। सब्जियों की क्षेत्र विशेष के लिए संस्तुत उन्नत किस्मों के बीजों की बुवाई करें। बीज सदैव विश्वसनीय दुकानों या कृषि विश्वविद्यालय से खरीदें। बुवाई से पूर्व बीजों को जैविक कल्चर अथवा रसायनों से शोधित कर लें। इन शोधित बीजों की बुवाई संस्तुत मात्रा एव विधि से ही करें। गर्मी में यही सब्जियाँ बाजार में अच्छी कीमत देती है।

इसके लिए कृषक स्तर पर सही जानकारी प्रदान करने एवं दक्ष करने की आवश्यकता है। समाचार पत्र, आकाशवाणी, दूरदर्शन कृषि सम्बन्धी सूचना देते हैं, साथ ही कृषि विभाग व विकास खण्ड भी किसानों तक सूचना पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं। परन्तु समय से सही सूचना किसानों तक पहुंचाना एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसके लिए स्वयं किसानों को भी प्रयासरत रहना होगा। किसानों को अपने जनपद के कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों से सम्पर्क करना होगा। यह सम्पर्क समयाभाव में दूरभाष से भी किया जा सकता है। जलवायु एवं कृषि परिस्थिति के अनुरूप कृषि सूचना प्राप्त करके तदनुसार अपने खेतों पर उपयोग कर वांछित लाभ प्राप्त किया जा सकता है। सभी कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों को भी नमी संरक्षण की नवीनतम एवं उपयोगी विधियों तथा जायद की सब्जियों हेतु उन्नत बीजों को किसानों तक पहुंचाने का भगीरथ प्रयास करना होगा। उपलब्ध आधुनिक कृषि तकनीक को संचार क्रान्ति के साथ जोड़ देने से यह सुदूर स्थित कृषकों तक तीव्रतम् गति से पहुंचाया जा सकता है।

(वाई0पी0एस0 डबास)

सम्पर्क सूत्र :– डा0 वाई0पी0एस0 डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा, गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड), ☎ 05944–233336 (कार्यालय), 233664 (निवास), Email-dee_gbpuat@rediffmail.com

विश्वविद्यालय हेल्प लाइन दूरभाष सं0 05944–234810, किसान कॉल सेन्टर निःशुल्क दूरभाष सं0 1800–180–1551

दृश्य यात्रा

101वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि प्रदर्शनी की झलकियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की झलकियाँ

मुद्रक : कृषिविश्वविद्यालय मुद्रणालय, पन्तनगर